गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
राजपत्रित अधि.(अ.प्रा.)
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स, रुड़की-247667
मो. 9760111555

वक्री ग्रह कितने शुभ, कितने अशुभ

हिन्दी ज्योतिष शास्त्र में वक्री ग्रहों पर बहुत ही सीमित सामग्री उपलब्ध है। प्रायः देखने में आता है कि फलादेश के लिए ग्रह-नक्षत्रों की गणनाएं करते समय ग्रहों की वक्रता को अनदेखा कर दिया जाता है। जबकि फलाफल के लिए वह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहॉ ग्रहों की वक्र चाल को देखकर फलादेश के लिए धैर्य से ध्यान रखा जाता है, वहॉ परिणाम भी तुलनात्मक रुप से संतोषजनक मिलते हैं। आवश्यकता है केवल इस विषय के प्रति गंभीर होकर ज्योतिष के गुप्त-सुप्त सूत्र तलाशने की।

अज्ञानता वश कुछ लोगों में ये भ्रम व्याप्त है कि संभवतः ग्रह अपने निश्चित परिपथ पर विपरीत दिशा में गोचर वश चलने लगता है। वास्तव में देखा जाए तो ऐसा नहीं है। कोई भी ग्रह अपनी वक्रीय अवस्था में उल्टा नहीं चलता। वह सदैव एक ही दिशा में गतिशील होता है। हम क्योकि पृथ्वी से उन पर देखते हैं, इसलिए हमें ग्रह के उल्टे चलने का भ्रम होता है। ग्रह की गति वस्तुतः पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण ही यथा समय वक्रीय प्रतीत होती है। सूर्य एवं चंद्र कभी वक्रीय नहीं होते तथा राहु और केतु छाया ग्रह सदैव वक्रीय गति में ही रहते हैं।

अपने निश्चित परिपथ में भ्रमण करते ग्रहों की वक्र गति का एक समय लगभग निश्चित है। बुध 24 दिन वक्री रहता है तथा एक दिन पहले और तीन दिन बाद तक स्थिर दिखाई देता है। शुक्र 42 दिन वक्री तथा 2 दिन पहले और 2 दिन बाद तक स्थिर रहता है। मंगल 80 दिन

वक्री तथा क्रमशः 2 दिन एवं 3 दिन पहले और बाद में स्थिर रहता है। गुरु की वक्री रहने की अवधि 120 दिन तथा स्थिर रहने की 5 दिन है। शनि के लिए यह समयावधि 140 दिन तथा 5 दिन है। यूरेनस, नेपच्यून तथा प्लूटो क्रमशः 150, 159 और 160 दिन वक्री तथा 9 और 10 दिन स्थिर रहते हैं।

ज्योतिष वाङ्मय को धैर्य से तलाशें तो ग्रहों की वक्रता पर जो सामग्री मिलती है, वह अपने में लगता है कहीं अधूरी है। तदन्तर में ग्रहों की वक्र चाल पर कोई ठोस शोध परक कार्य हो भी नहीं पाए। कुछ मूल और शास्वत ग्रंथों के अंश देखें:

होरासार के अनुसार वक्री गुरु बहुत ही अधिक बलशाली माना गया है, परंतु वह अपनी विरोधी राशि में स्थित नहीं होना चाहिए। इन राशियों में ग्रहों की वक्रता का विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जातक तत्व के अनुसार भी शुभ राशि अथवा स्थान के वक्री ग्रह राज्य तथा धन के प्रतीक हैं। शत्रु राशि में यह घाटा देते हैं। वक्री ग्रह की दशा में व्यक्ति को धन, सुख तथा मान-सम्मान मिलता है।

सारावली ग्रंथ के अनुसार भी बलशाली वक्री ग्रह सुखकारक तथा बलहीन अथवा शत्रुक्षेत्री वक्री ग्रह दुष्ट तथा अकारण और अशांति पूर्ण भ्रमण करवाते हैं।

साकेत निधि के अनुसार वक्री मंगल अपने से तृतीय भाव के प्रभाव को दर्शाता है। इसी प्रकार गुरु अपने से पंचम, बुध चतर्थ, शुक्र सप्तम तथा शनि अपने से नवम भाव के फल देता है।

जातक परिजात में स्पष्ट लिखा है कि वक्री ग्रह के अतिरिक्त शत्रु भाव में किसी अन्य ग्रह का भ्रमण अपना एक तिहाई फल खो देता है।

उत्तर कालामृत के अनुसार वक्री ग्रह के समय की स्थिति ठीक वैसी हो जाती है जैसे कि ग्रह के अपने उच्च अथव मूल त्रिकोंण राशि में होने से होती है।

फलदीपिका में मंत्रेश्वर महाराज का कहना है कि ग्रह की वक्री गति ग्रह के चेष्ठावल को बढ़ाती है।

कृष्णामूर्ती पद्धिति ग्रहों की वक्रता पर विशेष बल देती है। कृष्णामूर्ती प्रश्न ज्योतिष के अनुसार प्रश्नकाल के समय के ग्रह उनका वक्री ग्रह के नक्षत्र में होना आदि नकारात्मक उत्तर बताता है। यदि कोई संबंधित ग्रह वक्री नहीं है परन्तु वक्री ग्रह के नक्षत्र में प्रश्न के समय स्थित है तो वह कार्य ग्रह की वक्रता अवधि तक कदापि पूर्ण नहीं होगा। जैसे ही ग्रह मार्गी होगा वैसे ही कार्य की पूर्ति संभावित होने लगेगी।

इसी प्रकार और भी अनेक मत वक्री ग्रह को लेकर प्रस्तुत किए जा सकते हैं। परन्तु विवाद वहॉ होने लगता है जब एक स्थान पर ग्रह की वक्रता को शुभ और दूसरे मत के अनुसार अशुभ कहा जाता है। ज्योतिष का विद्यार्थी भ्रमित होने लगता है कि किस मत को स्वीकार किया जाए और किसको छोड़ा जाए। देखा जाए तो कृष्णामूर्ती पद्धति इस विषय के प्रति अधिक सत्यता के निकट सिद्ध हुई है। जिज्ञासु पाठक नवग्रहों के बलावल, दशा, गोचर आदि को थोड़ी देर के लिए भूल जाएं और ग्रहों की वक्रता को ध्यान में रखते हुए कुछ बीती हुई घटनाओं को अध्ययन-मनन करें। संभवतः उनको इस प्रयास से कुछ सकारात्मक सूत्र मिल जाएं और इस विवादास्पद विषय को लेकर उनका दृष्टिकोंण कुछ बदल जाए।

अंक ज्योतिष, ग्रहों के विभिन्न राशिगत गोचर और विशेष रुप से ग्रहों की वक्रता को लेकर मैंने सैकड़ों श्रमसाध्य कार्य किए हैं। सामने एक परिणाम अवश्य आया है कि जब भी कोई ग्रह विशेष रुप से गुरु वक्री अथवा मार्गी होता है तो देश, मौसम, राजनीति, प्राकृतिक आपदाओं तथा दुर्भिक्षों के साथ-साथ अनेक अच्छे और बुरे परिणाम अधिकांशतः देखने को मिलते हैं। जो कृष्णामूर्ती पद्धति के विद्यार्थी हों तो उन्होंने भी यह अवश्य अनुभूत किया होगा कि ग्रहों की वक्रता को वहॉ बहुत अधिक महत्व दिया गया है और भविष्य वाणियॉ वहॉ सत्य होती हैं।

जो भी तथ्य पाठक अपने स्वाध्याय, श्रमसाध्य गणनाओं और तदनुसार अनुभवों से निकालें, एक बार यह अवश्य स्वीकार करेंगे कि लेख में कुछ न कुछ सार अवश्य है। और शुभ तथा अशुभ घटनाओं के फलाफल में वक्री ग्रहों की एक महत्वपूर्ण भूमिका भी छिपी हुई है।